कृषि विज्ञान केन्द्र, कुरारा, हमीरपुर
प्रसार निदेशालय
बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा

डा0 एस.पी.एस. सोमवंशी, वैज्ञानिक–पशु विज्ञान

सूअर पालन की वैज्ञानिक विधि

सूअर पालन बढ़ते समय के साथ एक नए रोजगार के रूप में लोगों को आकर्षित कर रही है. गावों में इससे रोजगार के नए अवसर बन रहे है सूकर पालन कम कीमत पर और कम समय में अधिक आय देने वाला व्यवसाय है। 19वीं पशुधन गणना 2012 में देश में सूकरों की संख्या 10.29 मिलियन है। सूकर पालन में आने वाले खर्च के बारे में बताते हैं, "एक सूकर पर पूरे साल में पांच हजार रुपए का खर्चा आता है और बाजार में 12 हजार रुपए में बिकता है। पिछले साल मैंने इस व्यवसाय से एक लाख 20 हजार की आमदनी हुई थी। इससे एक फायदा और भी है कि यह एक वर्ष में दो बार बच्चे पैदा करती है और एक बार में 6-12 बच्चों को जन्म देती है।"

संकर सूअर पालन संबंधी कुछ उपयोगी बातें

- देहाती सूअर से साल में कम बच्चे मिलने एवं इनका वजन कम होने की वजह से प्रतिवर्ष लाभ कम होता है।
- विलायती सूअर कई कठिनाईयों की वजह से देहात में लाभकारी तरीके से पाला नहीं जा सकता है।
- विलायती नस्लों से पैदा हुआ संकर सूअर गाँवों में आसानी से पाला जाता है और केवल चार महीना पालकर ही सूअर के बच्चों से 50-100 रुपये प्रति सूअर इस क्षेत्र के किसानों को लाभ हुआ।
- इसे पालने का प्रशिक्षण, दाना, दवा और इस संबंध में अन्य तकनीकी जानकारी यहाँ से प्राप्त की जा सकती है।

- इन्हें उचित दाना, घर के बचे जूठन एवं भोजन के अनुपयोगी बचे पदार्थ तथा अन्य सस्ते आहार के साधन पर लाभकारी ढंग से पाला जा सकता है।
- एक बड़ा सूअर 3 किलों के लगभग दाना खाता है।
- इनके शरीर के बाहरी हिस्से और पेट में कीड़े हो जाया करते हैं, जिनकी समय-समय पर चिकित्सा होनी चाहिए।
- साल में एक बार संक्रामक रोगों से बचने के लिए टीका अवश्य लगवा दें।
- सूअर की नई प्रजाति ब्रिटेन की टैमवर्थ नस्ल के नर तथा देशी सूकरी के संयोग से विकसित की है। यह आदिवासी क्षेत्रों के वातावरण में पालने के लिए विशेष उपयुक्त हैं। इसका रंग काला तथा एक वर्ष में औसत शरीरिक वजन 65 किलोग्राम के लगभग होता है। ग्रामीण वातावरण में नई प्रजाति देसी की तुलना में आर्थिक दृष्टिकोण से चार से पाँच गुणा अधिक लाभकारी है।

दिन में ही सूअर से प्रसव

गर्भ विज्ञान विभाग, राँची पशुपालन महाविद्यालय ने सूअर में ऐच्छिक प्रसव के लिए एक नई तकनीक विकसित की है, जिसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने मान्यता प्रदान की है। इसमें कुछ हारमोन के प्रयोग से एक निर्धारित समय में प्रसव कराया जा सकता है। दिन में प्रसव होने से सूअर के बच्चों में मृत्यु दर काफी कम हो जाती है, जिससे सूअर पालकों को काफी फायदा हुआ है।

सूअर की आहार प्रणाली

सूकरों का आहार जन्म के एक पखवारे बाद शुरू हो जाता है। माँ के दूध के साथ-साथ छौनों (पिगलेट) को सूखा ठोस आहार दिया जाता है, जिसे क्रिप राशन कहते हैं। दो महीने के बाद बढ़ते हुए सूकरों को ग्रोवर राशन एवं वयस्क सूकरों को फिनिशर राशन दिया जाता है। अलग-अलग किस्म के राशन को तैयार करने के लिए निम्नलिखित दाना मिश्रण का इस्तेमाल करेः

	क्रिप राशन	ग्रोअर राशन	फिनिशर राशन
मकई	60 भाग	64 भाग	60 भाग
बादाम खली	20 भाग	15 भाग	10 भाग
चोकर	10 भाग	12.5 भाग	24.5 भाग
मछली चूर्ण	8 भाग	6 भाग	3 भाग
लवण मिश्रण	1.5 भाग	2.5 भाग	2.5 भाग
नमक	0.5 भाग	100 भाग	100 भाग
कुल	100 भाग		

रोविमिक्स	रोभिवी और रोविमिक्स	रोविमिक्स
200 ग्राम/100 किलो दाना मिश्रण	20 ग्राम/100 किलो दाना मिश्रण	200 ग्राम/100 किलो दाना मिश्रण

गर्भवती एवं दूध देती सूकरियों को भी फिनिशर राशन ही दिया जाता है।

दैनिक आहार की मात्रा

- ग्रोअर सूअर (वजन 12 से 25 किलो तक) : प्रतिदिन शरीर वजन का 6 प्रतिशत अथवा 1 से 1.5 किलो ग्राम दाना मिश्रण।
- ग्रोअर सूअर (26 से 45 किलो तक) : प्रतिदिन शरीर वजन का 4 प्रतिशत अथवा 1.5 से 2.0 किलो दाना मिश्रण।
- फिनसर पिगः 2.5 किलो दाना मिश्रण।
- प्रजनन हेतु नर सूकरः 3.0 किलो।
- गाभिन सूकरीः 3.0 किलो।
- दुधारू सूकरी 3.0 किलो और दूध पीने वाले प्रति बच्चे 200 ग्राम की दर से अतिरिक्त दाना मिश्रण। अधिकतम 5.0 किलो।
- दाना मिश्रण को सुबह और अपराहन में दो बराबर हिस्से में बाँट कर खिलायें।